हिन्दुस्तान
1936
भरोसा नए हिन्दुस्तान का
रविवार
7 जून 2026, बरेली

PAGE NO, 09, MIDDLE

एसआरएमएस में रुहेलखंड का पहला बोन मैरो ट्रांसप्लांट

बरेली, वरिष्ठ संवाददाता। श्रीराम मूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में रुहेलखंड और कुमायूं रीजन का पहला बोन मैरो ट्रांसप्लांट हुआ। मेडिकल कालेज में पीठ दर्द से परेशान उत्तराखंड की महिला का बोन मैरो ट्रांसप्लांट किया गया। शनिवार को प्रेसवार्ता में यह जानकारी देते हुए संस्थान के चेयरमैन देवमूर्ति ने बताया कि एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज लखनऊ और दिल्ली के बीच पहला संस्थान बन गया है जहां यह सुविधा उपलब्ध है।

एसआरएमएसर ट्रस्ट के संस्थापक एवं चेयरमैन देव मूर्ति ने बताया कि पहले सफल बोन मैरो ट्रांसप्लांट के बाद चार अन्य मरीजों का भी रजिस्ट्रेशन हो चुका है। जल्द ही एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज में बोन मैरो ट्रांसप्लांट विंग

एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज में बोन मैरो ट्रांसप्लांट की जानकारी देते चेयरमैन देवमूर्ति।

स्थापित की जाएगी। एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज स्थित आरआर कैंसर इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर डॉ.पियूष अग्रवाल ने बताया कि महिला मरीज को टारगेटेड थेरेपी और कीमोथेरेपी के जरिये पहले कैंसर मुक्त किया गया। मल्टीपल मायलोमा के दोबारा होने के खतरे को कम करने के लिए उनके परिवार को बोन मैरो ट्रांसप्लांट की सलाह दी गई। उनके तैयार होने पर 19 मई को ऑटोलोगस ट्रांसप्लांट यानी मरीज के शरीर से ही स्वस्थ बोन मैरो लेकर उनका ट्रांसप्लांट किया गया। मरीज को जल्द ही घर जाने की अनुमति दी जाएगी। प्रेस कांफ्रेंस का संचालन एसआरएमएस मेडिकल कालेज के डायरेक्टर आदित्य मूर्ति ने किया। इस दौरान एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) डॉ. एमएस बुटोला, एसआरएमएस मेडिकल कॉलेज के मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. आरपी सिंह, कैंसर विभाग स्टाफ और बोन मैरो ट्रांसप्लांट टीम के मेंबर रहे।

ब्लड कैंसर, थैलेसीमिया के इलाज में उपयोगी

क्लीनिकल हेमेटोलॉजिस्ट डॉ. दिशा सत्या ने बताया कि इस विधि से ब्लड कैंसर, थैलेसीमिया और सिकल सेल एनीमिया जैसी गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है।

मल्टीपल मायलोमा का बेहतर इलाज

मेडिकल ऑकोलॉजिस्ट डॉ. श्रीनिवास अनादि नायडू ने बताया कि मल्टीपल मायलोमा ब्लड कैंसर का एक प्रकार है। इससे हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। स्टेम सेल ट्रांसप्लांट से इसे नियंत्रित किया जाता है।